शिक्षा : वर्तमान विकास एवं नैतिकता के सन्दर्भ मे

डॉ. भागीरथमल
व्याख्याता – लोकप्रशासन विभाग
राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर

सारांश:-

शिक्षा मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है। यह समाज व राष्ट्र की जागृति उनत्ति का माध्यम है। शिक्षा की समुचित व्यवस्था होने का तात्पर्य है राज्य की प्रगति और शिक्षा की उपेक्षा का अर्थ है राष्ट्र की अवनति तथा अनेक समस्याओं का उभरना ।

शिक्षा से ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होता है, अन्धकार से उजाले की ओर आता है। शिक्षा से बालक का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक विकास अर्थात् सर्वांगिण विकास होता है।

शिक्षा को प्राचीन भारत में भी महत्वपूर्ण स्थान मिला हुआ था। शिक्षा के कारण ही विश्व में भारत को धर्म गुरू के नाम से जाना जाता था। भारत में सहशिक्षा का वातावरण था।

दासता के एक लम्बे दौर में तात्कालीन शासकों ने शिक्षा को निजी लाभ का माध्यम बना लिया था। राष्ट्र की स्वाधीनता के पश्चात् देश के सामने अन्य महत्वपूर्ण समस्याओं की तरह देश की अशिक्षित जनता को शिक्षित करने की भी महत्वपूर्ण समस्या थी। शिक्षा से ही व्यक्ति, समाज व राष्ट्र का सर्वांगिण विकास संभव है।

शिक्षा राज्य सूची का विषय था। संविधान में वर्णित सूचियों के अनुसार संघ सूची के विषयों पर केन्द्र सरकार, राज्य सूची के विषयों पर राज्य सरकार व समवर्ती सूची के विषयों पर, केन्द्र व राज्य सरकारें अर्थात् दोनों सरकारें कानून बना सकती हैं। दोनों सरकारों द्वारा बनाये गये कानूनों में विरोधाभास की स्थिति उत्पन्न होती है तो केन्द्र सरकार द्वारा बनाया गया कानून वैध होगा। वर्तमान में शिक्षा समवर्ती सूची में है।

भारतीय निरक्षर जनता को शिक्षित करने के लिए अनेक आयोग व समितियाँ बनी लेकिन जो ठोस कार्य होना चाहिए था, वह नहीं हो सका। देश आर्थिक तंगी की वजह से आयोगों और समितियों द्वारा दिये गये सुझावों को क्रियान्वित नहीं कर पाया। देश में अशिक्षा की समस्या शहरों और गांवों दोनों जगहों पर ही है लेकिन आबादी के अनुपात में ग्रामीण जनता ज्यादा अशिक्षित है।

प्राथमिक शिक्षा हमारी आधारशिला है। ग्रामीण क्षेत्र में प्राथमिक शिक्षा का भार पंचायती राज व्यवस्था को सौंपा गया है। राज्य सरकार द्वारा प्राथमिक विद्यालयों में बालक बालिकाओं की नामांकन वृद्धि एवं उनके ठहराव को सुनिश्चित करने के लिए निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें वितरित की जाती हैं। केन्द्र सरकार के सहयोग से राज्य सरकार ने प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले बालक बालिकाओं को दोपहर का भोजन वितरण की व्यवस्था कर रखी है।

1. शिक्षा का अर्थ एवं परिभाषा

शिक्षा : –

शिक्षा शब्द का सामान्यतः जिस रूप में प्रयोग किया जाता है, वह शिक्षा के सीमित अर्थ को अभिव्यक्त करता है। इस सामान्य प्रयोग में शिक्षा का अर्थ विद्यालयी, महाविद्यालयी, विश्वविद्यालयी औपचारिक शिक्षा तक सीमित रहता है। यहाँ विचारणीय प्रश्न यह है कि **"क्या औपचारिक शिक्षा ही शिक्षा है या इसके अतिरिक्त भी शिक्षा का कोई और स्वरूप है।"** इसका एक उत्तर मिलता है– पश्चिम में चलें 'डिस्कूलिंग सोसायटी" के आन्दोलन के रूप में जो 19वीं शताब्दी के सातवें दशक में इवान इलियच की पुस्तक 'डिस्कूलिंग सोसायटी' के माध्यम से संसार के शिक्षाविदों के सामने आया। इस आन्दोलन के प्रणेताओं का मानना है कि शिक्षा के संस्थानीकरण के परिणामस्वरूप मानव–शोषण शुरू हुआ है। वर्तमान में विद्यालयों में दी जा रही शिक्षा घिसी–पिटी, गली सड़ी है– वस्तुतः बालक की शिक्षा जो कि उसके विकास में सहायक है, वह उसके परिवार व समुदाय में, विद्यालय से बाहर होती है। उनका कहना यह है कि 'सेल्फ लर्निंग इज द बेस्ट लर्निंग।' इनके इस अभिमत के समर्थक श्री अरविन्द, स्वामी विवेकानन्द आदि भारतीय चिन्तक भी हैं जो कि यह कहते हैं कि बालक स्वयं सीखता है, वह अपनी प्रकृति के अनुसार सीखता है। शिक्षक का काम उसका इस कार्य में मार्ग–दर्शन का है, उस पर अपनी बातों को, ज्ञान को थोपने का नहीं। इन दृष्टिकोणों से तो यह सुस्पष्ट होता है कि शिक्षा संस्थानों की चार दीवारी में बन्द

शिक्षा ही शिक्षा नहीं है। इसके विपरित इसी विश्व के पिछड़े देशों में "स्कूल चलो अभियान" पर जोर है क्योंकि वहाँ परिवार एवं समुदाय में सीखने के साधन स्त्रोतों की कमी है। अतः वहाँ स्कूल ही आशा की किरण है। इन दो विचारों से यह बात स्पष्ट होती है कि शिक्षा, जो कि सीखने– सीखाने की प्रक्रिया है, विकास की प्रक्रिया है।

उसका स्वरूप न केवल औपचारिक है और न अनौपचारिक । यह जन्म से मृत्यु पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है–जिसके साधन हैं– परिवार, मित्र मण्डली, समुदाय विद्यालय एवं समुदाय मे स्थित अन्ये संस्थाएं । आज शिक्षा त्रिमुखी प्रक्रिया है जिसमें समाज महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। शिक्षा सामाजिक वातावरण में होती है– किसी निर्जन स्थान में नहीं। बालक बहुत कुछ अपने वातावरण से सीखता है। वह सीखता वही है जो उसे रूचिकर हो, उसकी प्रकृति के अनुकूल हो। थोपी हुई बातें, परीक्षादि की विवशता में वह ग्रहण अवश्य करता है किन्तु यह ग्रहण अत्यन्त अल्पकालिक होता है और इसका उसके आचरण पर, उसके विकास पर नगण्य सा प्रभाव होता है। अतः यह कहा जा सकता है कि औपचारिक शिक्षा प्रभावी नहीं है। मात्र औपचारिक शिक्षा ही शिक्षा नहीं है। 'शिक्षा शब्द का अर्थ सम्बन्धी विश्लेषण हमें किन्ही निश्चित निष्कर्षो पर पहुंचाने में सहायक हो सकेगा।,[1]

शिक्षा (Education) का शाब्दिक अर्थ – विद्वानों के अनुसार 'एजुकेशन' शब्द की व्युत्पत्ति लेटिन भाषा के निम्नांकित शब्दों से हुई है–

शब्द जिनसे व्युत्पत्ति हुई है।	इन शब्दों का अर्थ
1. एडूकेटम (Educatum)	प्रशिक्षण, शिक्षण (To train or act of teaching or Training)
2- एड्सीयर (Educere)	विकसित करना, बाहर निकालना (To lead out /To bring forth)
3. एडुकेयर (Educare)	शिक्षित करना, आगे बढ़ाना / बाहर निकालना / विकास करना (To educate, to bring up, to raise)

उपर्युक्त शब्दों में जो समान अर्थ है, वह है विकास करना / आगे बढ़ाना। शाब्दिक दृष्टि से एजूकेशन शब्द की व्युत्पत्ति E+Duco के योग से हुई है। इन दो शब्दों में से 'E' का अर्थ है 'अन्दर से' तथा 'Duco' का अर्थ है–आगे बढ़ाना / विकास करना। दोनों को मिलाकर अर्थ हुआ– 'अन्दर से विकास करना । अन्दर से विकास करना शब्दावली अर्थ को स्पष्ट रूप में प्रकट नहीं कर पाती। 'शिक्षा' व्यक्ति / बालक के लिए है। बालक के सन्दर्भ में अन्दर से विकास करने का अभिप्राय क्या है। बालक के अन्दर कुछ शक्तियों जन्म से ही निहित होती हैं जिन्हें जन्मजात या प्रकृति प्रदत्त शक्तियां कहा जाता है। शिक्षा वह है जो बालक के अन्दर निहित इन शक्तियों को बाहर निकाले, उनका विकास करे। इस प्रकार अंग्रेजी शब्द एजूकेशन (Education) के अर्थ को इस प्रकार विश्लेषित किया जा सकता है–

शिक्षा विकास की प्रक्रिया है।

यह बालक के अन्दर निहित प्रकृति–प्रदत्त जन्मजात शक्तियों का प्रकटीकरण कराती है, उन्हें बाहर निकालती है। इसे यो प्रस्तुत किया जा सकता है। बालक के अन्दर निहित प्रकृति–प्रदत्त शक्तियाँ बीज रूप में है। शिक्षा, इन बीज रूप प्रकृति प्रदत्त शक्तियों को वृक्ष रूप में विकसित करने का साधन है जो कि खाद–पानी एवं वातारण के रूप में है तथा इसके परिणाम स्वरूप विकसित वृक्ष, बालक के पूर्णतः विकसित व्यक्तित्व रूप में है जो कि शिक्षा के माध्यम से विकसित हुआ है। अतः शिक्षा विकास की प्रक्रिया है।

यदि 'एजूकेशन' शब्द की व्युत्पत्ति के मूल में निहित उपर्युक्त तीन शब्दों (Educatum, Educere, Educare) का पृथक–पृथक अर्थ–ग्रहण करें तो 'एजूकेशन' शब्द का अर्थ होगा :-

-प्रशिक्षण

-संवर्द्धन तथा

-मार्ग दर्शन ।

हिन्दी शब्द 'शिक्षा' का शाब्दिक अर्थ- 'शिक्षा' शब्द संस्कृत की 'शिक्ष' धातु (मूल शब्दांश) से व्युत्पन्न हुआ है जो कि 'शिक्ष, शिक्षणे 'सीखने' के अर्थ में प्रयुक्त होता है तथा यही प्रेरणार्थक रूप में 'सिखाना' अर्थ व्यक्त करता है। इस प्रकार 'शिक्षा' शब्द का अर्थ 'सीखना–सिखाना' है। सीखने के परिणामस्वरूप व्यवहार में परिवर्तन होता है, और यह परिवर्तन विकासात्मक होता है। इस तरह 'शिक्षा' शब्द का अर्थ हुआ–

वे सभी अनुभव जिन्हें मनुष्य अपने प्रयास से अथवा किसी अन्य की सहायता से ग्रहण करता है तथा जिनके ग्रहण के परिणामस्वरूप उसके व्यवहार में परिवर्तन होता है शिक्षा के अन्तर्गत आते है।

-शिक्षा सीखने–सिखाने की प्रक्रिया है।

-सीखने–सिखाने की यह प्रक्रिया मनुष्य का विकास करती है।

अंग्रेजी एवं हिन्दी शब्द : 'एजूकेशन' एवं 'शिक्षा' के अर्थ में समानता –

'एजूकेशन' एवं 'शिक्षा' के शाब्दिक अर्थ के विश्लेषण से एक तथ्य स्पष्ट होता है कि दोनों शब्दों के अर्थ में भिन्नता होते हुए भी, इनमें इस दृष्टि से साम्य है कि दोनों में मानव विकास की बात निहित है।

शिक्षा की परिभाषऐं - प्रारम्भिक पंक्तियों में उल्लेख किया जा चुका है कि दार्शनिक एवं अन्यान्य मतभेदों के कारण 'शिक्षा' की अवधारण के सम्बन्ध में मतैक्य नहीं हो सकता। विभिन्न देशों में विद्वानों ने 'शिक्षा' को भिन्न–भिन्न रूप में परिभाषित किया है। यहां कुछेक प्रतिनिध्यात्मक परिभाषाएँ प्रस्तुत की जा रही हैं–

शिक्षा, जन्मजात या अन्तर्निहित शक्तियों के प्रकटीकरण एवं विकास की प्रक्रिया के रूप में–

उपर्युक्त शब्दावली से यह आशय निकलता है कि शिक्षार्थी को बाहर से कुछ नहीं प्रदान किया जाता है बल्कि उसके अन्दर जो शक्तियाँ निहित हैं उन्हें ही बाहर लाया जाता है। इन शक्तियों के बारे में शिक्षार्थी अनभिज्ञ होता है। वह अपनी अन्नत शक्तियों से परिचित नहीं होता किन्तु शिक्षा उसे इनसे परिचित कराते हुए उन्हें बाहर प्रकट करती है।

फ्रॉबेट - शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक की जन्मजात शक्तियाँ बाहर प्रकट होती हैं।

पेस्टालॉजी - शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, समरूप तथा प्रगतिशील विकास है।

सुकरात – शिक्षा का अर्थ है संसार के उन सर्वमान्य विचारों को प्रकाश में लाना जो कि प्रत्येक मानव के मस्तिष्क में अदृश्य रूप में निहित होते हैं।

शिक्षा, अन्तर्निहित आध्यात्मिक शक्ति के विकास की प्रक्रिया के रूप में - इस प्रकार की परिभाषा देने वाले विद्वान, मनुष्य के अन्दर निहित तत्वों के आत्मतत्व को ही प्रमुखता देते हैं और आत्मिक विकास को ही प्रमुख विकास मानते हैं। इस विकास के होने पर ही मानव अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर पाता है, जिसे भारतीयों ने 'मुक्ती' की संज्ञा देते हुए शिक्षा की परिभाषा 'सा विद्या या विमुक्तय' दी है – अर्थात् विद्या अथवा शिक्षा वह है जो मुक्ति दिलाये, मुक्ति के लिए प्रवृत करें। इनके अनुसार शिक्षार्थी अनेक प्रकार के बन्धनों में जकड़ा हुआ होता है। ये बन्धन शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आत्मिक हो सकते हैं। शिक्षा वह है जो शिक्षार्थी को उसमें छिपी शक्ति एवं ज्ञान से परिचित कराये जिससे कि वह इन बन्धनों से मुक्त हो सके।

भारतीय चिंतक स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्द तथा महात्मा गाँधी द्वारा दी गयी शिक्षा की परिभाषायें इसी कोटि में आती हैं।

स्वामी विवेकानन्द – शिक्षा मनुष्य के अन्दर ही सन्निहित पूर्णता का प्रदर्शन है। –

श्री अरविन्द – अन्तर्निहित ज्योति की उपलब्धि के लिए शिक्षा विकासशील आत्मा की प्रेरणादायी शक्ति है।

महात्मा गाँधी– शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक तथा मनुष्य में अन्तर्निहित शारीरिक, मानसिक एवं अध्यात्मिक श्रेष्ठतम को प्रकाश में लाना है।[2]

पाश्चात्य विद्वानों की इस श्रेणी में आने वाली परिभाषायें निम्नांकित हैं–

हार्न- शिक्षा एक ऐसी चिरंतन प्रक्रिया है जो शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि ये उदबुद्ध, स्वतन्त्र तथा चेतन मनुष्य का ईश्वर के साथ सामन्जस्य स्थापित कराती है।

फ्रॉबेल– बालक मानवीय एवं दैवीय दोनों होता है और शिक्षा अपना उद्देश्य तब तक पूरा नहीं करती जब तक कि वह बालक में दैवीय तत्व का विकास नहीं करती।

रोबर्ट रस्क - शिक्षा को मानव जीवन को इस योग्य बनाना चाहिये कि वह अपनी संस्कृति की सहायता से आध्यात्मिक जगत में अधिक से अधिक पूर्णता से प्रवेश कर सके।

सन्दर्भ सूची : –

1. शर्मा, डी. एल., शिक्षा तथा भारतीय समाज, आर. एल. बुक डिपो, मेरठ, 1994, पृ. 2-3

2. गांधी एम. के., बेसिक एज्यूकेशन, नव जीवन पब्लिशिंग हाऊस, अहमदाबाद, 1951, पृ. 186